International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 06, No. 01(IV), January - March, 2024, pp. 155-159

# राजस्थान विधानसभा चुनावों में जाति कारक की भूमिका का विश्लेषण

डॉ. मनोज कुमार भारी*

**सार**

*राजस्थान के मारवाड़ का कुछ हिस्सा और शेखावाटी क्षेत्र जाट बहुल है, दक्षिणी राजस्थान गुर्जर और मीणा बहुल है. हाड़ौती क्षेत्र ब्राह्मण, वैश्य और जैन बहुल है. मत्स्य क्षेत्र की आबादी मिश्रित है, जबकि मध्य राजस्थान में मुस्लिम, मीणा, जाट और राजपूतों का प्रभाव है. मेवाड़–वागड़ क्षेत्र यानि उदयपुर संभाग आदिवासी बहुल क्षेत्र है. विधानसभा की 200 सीटों में से 107 सीटें ऐसी हैं, जिनमें एक या दो जातियों का ही प्रभुत्व रहा है। इनमें 75 सीटों पर तो एक ही जाति का दबदबा है। वहीं 32 सीटों पर दो जातियां का प्रभाव रहता है। अगर जातियों के दबदबे की बात करें तो जाट 21, ब्राह्मण 14, वैश्य 12, राजपूत 12, गुर्जर 5, रावत 3, यादव 3,पंजाबी और सिख दो दो और सिंधी एक सीट पर निर्णायक भूमिका में रहते हैं। परन्तु जाति कारक सदैव प्रभावशाली नहीं रहता या उसमें भी उन्ही प्रभावशाली जातियों को अधिक तवज्जो देने के कारण उसी क्षेत्र की शेष अन्य छोटी जातियां विपरीत ध्रुवीकरण के माध्यम से सीट के दलगत समीकरण को परिवर्तित कर देती है।*

***शब्दकोशः*** *जातिकृत वर्ग, महापंचायत, जातिगत–ऊब, चुनावी–नौटंकी, विपरीत–ध्रुवीकरण।*

---

## प्रस्तावना

राजस्थान की सियासत जातिकृत वर्ग के रूप में सिमटी हुई है. राज्य में 89 फीसदी हिंदू और 11 फीसदी अल्पसंख्यक समुदाय के लोग हैं, जिसमें 9 फीसदी मुस्लिम हैं. दलित आबादी 18 फीसदी, आदिवासी 13 फीसदी, जाटों की आबादी 10–12 फीसदी, गुर्जर व राजपूतों की आबादी 9–9 फीसदी, ब्राह्मण और मीणा की आबादी 7–7 फीसदी है. राजस्थान के उत्तरी हिस्से में मारवाड़ का कुछ हिस्सा और शेखावाटी क्षेत्र जाट बहुल है, दक्षिणी राजस्थान गुर्जर और मीणा बहुल है. हाड़ौती क्षेत्र जिसमें कोटा, बूंदी, बारां और झालावाड़ जिला शामिल है ब्राह्मण, वैश्य और जैन बहुल है. मत्स्य क्षेत्र में आबादी मिश्रित है, जबकि मध्य राजस्थान जिसमें जोधपुर, अजमेर, पाली, टोंक, नागौर जिले आते हैं, वहां मुस्लिम, मीणा, जाट और राजपूतों का प्रभाव है. मेवाड़–वागड़ क्षेत्र यानि उदयपुर संभाग आदिवासी बहुल क्षेत्र है।

2023 के चुनावों से पहले भी जयपुर में कई जाति आधारित महापंचायतें देखीं गई, जहां प्रमुख जाति नेताओं ने कांग्रेस और भाजपा दोनों को उम्मीदवारों को टिकट वितरित करते समय जाति कारकों पर ध्यान देने का संदेश दिया। जाट समुदाय राजस्थान में सबसे बड़ा जाति समूह है, जिनका प्रभाव मुख्यतः मारवाड़ और शेखावाटी क्षेत्रों में है और इनकी उपस्थिति 85 विधानसभा क्षेत्रों में है। पिछले चुनाव में समुदाय ने 42 विधायकों को राज्य विधानसभा में भेजा था। वे मुख्य रूप से दोनों दलों से एक जाट मुख्यमंत्री की मांग करते हैं; हालाँकि, यह मांग अभी तक पूरी नहीं हुई है। भाजपा और कांग्रेस दोनों ने अपने इकाई प्रमुख के रूप में दोनों जाट चेहरों सतीश पूनिया और गोविंद डोटासरा को चुना; हालाँकि, मार्च 2023 में राजस्थान भाजपा के प्रमुख के रूप

* सह–आचार्य, राजनीति विज्ञान, आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा, जयपुर, राजस्थान।

में एक ब्राह्मण चेहरे और चित्तौड़गढ़ से सांसद सी.पी. जोशी को स्थानांतरित करने से चुनावों के दौरान भाजपा को अच्छा खासा जाट मतदाताओं का नुकसान हुआ। जाटों के विपरीत, राजपूतों ने लंबे समय तक भाजपा पर भरोसा किया है। चाहे वह राजघरानों को भाजपा में शामिल करने का मामला हो या दो मुख्यमंत्रियों, वसुंधरा राजे और भैरों सिंह शेखावत का, भाजपा ने हमेशा इस समुदाय से वोट बटोरे हैं, इस बार भी दिया कुमारी को उप मुख्यमंत्री बनाकर भाजपा ने राजपूत वोट बैंक की निष्ठा का पूर्ण सम्मान किया है. राज्य की कुल आबादी में राजपूतों की हिस्सेदारी लगभग 6 प्रतिशत है। **2018 के चुनावों में, भाजपा ने 29 राजपूत उम्मीदवारों को मैदान में उतारा, जिनमें से 24 जीते, जबकि कांग्रेस ने 15 उम्मीदवार उतारे, जिनमें से केवल दो ही जीत सके।** यह समीकरण इस चुनाव में भी कारगर रहा है. राज्यवर्धन राठौड़ और दीया कुमारी को शामिल करने और उनके पहले से ही मजबूत राज्य नेतृत्व के साथ, भाजपा इस जाति समीकरण को मजबूत करने में कामयाब रही है।

पिछले विधानसभा चुनावों में, परंपरागत रूप से भाजपा को वोट देने वाले गुर्जरों ने अपना वोट कांग्रेस की ओर स्थानांतरित कर दिया क्योंकि उन्हें यकीन था कि कांग्रेस के सत्ता में आने पर सचिन पायलट मुख्यमंत्री बनेंगे। हालाँकि, उन्हें तब निराशा हुई जब उन्हें उप मुख्यमंत्री बनाया गया और बाद में हटा दिया गया। कांग्रेस के इस कदम से जातीय भावनाएं आहत हुई और यह इस बार बीजेपी के पक्ष में गया. **गुर्जर समुदाय का लगभग 30 सीटों पर प्रभाव है, मुख्य रूप से पूर्वी राजस्थान के करौली, टोंक, हिंडौन और दौसा जिलों में।** बीजेपी ने कांग्रेस की तुलना में चुनाव से पूर्व जातीय समीकरण को बेहतर तरीके से प्रबंधित किया. भाजपा ने जाट चेहरे जगदीप धनखड़ को उपराष्ट्रपति बनाया, जबकि ब्राह्मण सी.पी. जोशी को राजस्थान भाजपा प्रमुख और राजपूत राजेंद्र राठौड़ को राजस्थान विधानसभा में विपक्ष का नेता बनाया[1], वहीं गहलोत का माली वर्ग अल्पसंख्यक जाति है जो अधिक सीटों पर व्याप्त नहीं है और प्रभावी भी नहीं है, पायलेट को किनारा करने से गुर्जर नाराज थे और ले दे कर डोटासरा ही एक चेहरा कांग्रेस के पास था जिसे जाटों के वोट के लिए सामने किया जाने से उसे लाभ था. बीजेपी का यह समीकरण कांग्रेस से ज्यादा असरकारक रहा और भगवा पार्टी के लिए अच्छे परिणाम दे गया. हालांकि, कांग्रेस ने वीर तेजाजी और महाराणा प्रताप के नाम पर बोर्ड बनाकर इन जातियों को लुभाने की कोशिश भी की, परन्तु जनता चुनावी–नौटंकी को समझने में अब पूर्व की तुलना में ज्यादा प्रौढ़ एवं परिपक्व हो चुकी है. कांग्रेस सरकार ने अंतिम दाँव दोबारा सत्ता में आने पर जाति आधारित जनगणना कराने के रूप में खेला लेकिन जनता को यह भी नहीं लुभाया। दलित और आदिवासी वोटों के लिए बीएसपी व बीटीपी और बीएपी जैसे दल क्रियाशील हैं वहीं आरएलपी, आरएलडी और जेजेपी जाट वोटों के जरिए समीकरण साधने की कोशिश में रही परन्तु 18 की तुलना में अधिक सफल नहीं रही।

नारायण बारेठ का मत है कि "राजस्थान की राजनीति में जाति अपनी भूमिका निभाती है, लेकिन हाल के दिनों में अधिक जागरूकता और बेहतर शिक्षा के साथ इसकी भूमिका कम हो गई है। युवा पीढ़ी इस जाति विभाजन में कम विश्वास करती है,[2]" उदाहरण के लिए, उन्होंने कहा, "2013 में, भाजपा ने मुख्य रूप से जाट या गुर्जर निर्वाचन क्षेत्रों में जीत हासिल की, जिन्हें कभी कांग्रेस का गढ़ माना जाता था[3]।

हनुमान बेनीवाल, जिन्होंने 2018 में राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी बनाई और लगभग 81 उम्मीदवार उतारे, ने नागौर, बाड़मेर, सीकर, झुंझुनू और चूरू जैसे समुदाय बहुल निर्वाचन क्षेत्रों में जाट गौरव के बारे में खुलकर बात की । उनकी रैलियों ने जाट–बहुल निर्वाचन क्षेत्रों में भीड़ को आकर्षित किया और इससे बड़ा रोचक परिणाम कुछ सीटों पर ये रहा कि इस दल को प्राप्त मत से कम मतों का अंतर हार और जीत का रहा । **रालोपा समर्थक भी मानते हैं कि ष्इनके उम्मीदवार एक गंभीर दावेदार के बजाय खेल बिगाड़ने वाले अधिक है।[4]** इस चुनाव में राजपूत नेता लोकेंद्र सिंह कालवी, गुर्जर नेता किरोड़ी सिंह बैंसला और मीणा नेता किरोड़ी लाल मीणा जैसे जाति–आधारित नेताओं को कम महत्व मिल पाया। बॉलीवुड फिल्म पद्मावत की रिलीज के खिलाफ विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व करने वाले कालवी ने अक्टूबर मे जयपुर में शक्ति प्रदर्शन रैली आयोजित की, लेकिन यह उनकी राजनीतिक आकांक्षाओं के लॉन्चपैड के रूप में विफल रही, जिसमें 500 से भी कम लोग शामिल हुए।

प्रदेश विधानसभा की 200 सीटों में से 107 सीटें ऐसी हैं, जिनमें एक या दो जातियों का ही प्रभुत्व रहा है। इनमें 75 सीटों पर तो एक ही जाति का दबदबा है। वहीं 32 सीटों पर दो जातियां को प्रभाव रहता है। अगर जातियों के दबदबे की बात करें तो **जाट 21, ब्राह्मण 14, वैश्य 12, राजपूत 12, गुर्जर 5, रावत 3, यादव 3, पंजाबी और सिख दो दो और सिंधी एक सीट पर निर्णायक भूमिका में रहते हैं।** इन सीटों पर हर चुनाव में उन्हीं जातियों के उम्मीदवार को टिकट मिला है। पार्टी कोई सी भी हो, उन्हीं जातियों के प्रत्याशी विधायक चुने गए हैं। हालांकि, यह हालात परिसीमन के बाद हुए दो चुनावों के ट्रेंड पर आधारित है। **कांग्रेस प्रदेश के 12 जिलों में मुसलमानों को टिकट देती आई है। इनमें सीट भी लगभग तय है– जैसे, चूरू शहर, जैसलमेर में पोकरण, नागौर में मकराना, सीकर में फतेहपुर, टोंक, सवाई माधोपुर, बाड़मेर में शिव, जोधपुर में सूरसागर या फलौदी एवं पुष्कर सीट शामिल है।** जयपुर, भरतपुर एवं अलवर में दो–दो सीटों पर कांग्रेस मुसलमानों को टिकट देती है। अजमेर शहर की नॉर्थ सीट पर सिंधी समुदाय से विधायक चुने जाते हैं। कांग्रेस भाजपा ने अधिकांश समय सिंधी समुदाय से प्रत्याशी बनाया है। वहीं, अजमेर साउथ एससी के लिए आरक्षित है, लेकिन इसमें भी कोली समाज को ही तवज्जो मिलती है।

राज्य की 14 ब्राह्मण सीटों में केकड़ी, बूंदी, भीलवाड़ा, बीकानेर वेस्ट, सरदारशहर, रतनगढ़, दौसा, धौलपुर,चौमूं, हवामहल, सांगानेर, सूरसागर, पीपल्दा, सीकर विधान सभा सीट शामिल है; 21 जाट सीटों में किशनगढ़, बायतु, डीग–कुम्हेर, सहाड़ा, तारानगर, नोहर, भादरा, सांगरिया, हनुमानगढ़, सूरतगढ़, आमेर, विराट नगर, झुंझुनूं, मंडावा, सूरजगढ़, डेगाना, खींवसर, दांतारामगढ़, खंडेला, लक्ष्मणगढ़, मालपुरा विधान सभा सीट शामिल है; 5 गुर्जर सीटों में नसीराबाद, थानागाजी, हिंडौली, आसींद, बाड़ी विधान सभा सीट शामिल है; 3 रावत सीटों में पुष्कर, ब्यावर, भीम; 12 वैश्य सीटों में अलवर शहर, अंता, छबड़ा, भरतपुर, राजाखेड़ा, किशनपोल, मालवीय नगर, जोधपुर शहर, कोटा नॉर्थ, कोटा साउथ, पाली, मावली; 3 यादव सीटों में बहरोड़, किशनगढ़बास, मुंडावर; 12 राजपूत सीटों में शिव, बीकानेर ईस्ट, कोलायत, चित्तौड़गढ़, चूरू, विद्याधर नगर, शेरगढ़, जैसलमेर, लाडपुरा, बाली, कुंभलगढ़, वल्लभनगर; 2 पंजाबी सीटों में आदर्श नगर जयपुर तथा गंगानगर; 2 सिख सीटों में सादुलशहर करनपुर वहीं 1 सिंधी सीट में अजमेर नॉर्थ की सीट शामिल है।

कुछ सीटों में जनता की उस जाति से नाराजगी या जातिवाद से परे की वोटिंग को भी देखा जा सकता है जैसे 2018 विधान सभा चुनाव में जयपुर में बस्सी में भाजपा कांग्रेस ने मीणा को प्रत्याशी बनाया तो निर्दलीय अंजूदेवी धानका जीत गई और लगातार दूसरी बार विधायक बनी। नवलगढ़ में भाजपा–कांग्रेस ने जाट को उतारा तो निर्दलीय डा.राजकुमार शर्मा लगातार दो चुनाव जीत गये,पहली बार वे बसपा की टिकट पर जीते थे. इसी तरह खेतड़ी से बसपा के पूरणमल सैनी ने चुनाव जीता, क्योंकि दोनों प्रमुख पार्टियों ने खेतड़ी से गुर्जर को प्रत्याशी बनाया था। लूणकरणसर से निर्दलीय माणिकचंद सुराणा की जीत भी मतदाताओं की जातिगत–ऊब या एक जाति विशेष के मतों के उसी जाति के ही दो प्रत्याशियों में बंट जाने का परिचायक है. यहां से दोनों पार्टियों ने जाट प्रत्याशी को मैदान में उतारा था। सार्दुलशहर से दो जाट प्रत्याशी उतारे तो बसपा के मनोज न्यांगली ने जीत हासिल की। पाली में वैश्य समुदाय के ज्यादा वोट नहीं है लेकिन, लगातार ज्ञानचंद पारख जीतते रहे हैं।

एक स्थूल आकलन के अनुसार **''राज्य की कुल 32 सीटों पर दो जातियों का ही दबदबा देखा गया है** : डूंगरगढ़ – जाट या नाई , नसीराबाद – जाट या गुर्जर, गुड़ामालानी – जाट या विश्नोई, बाड़मेर – जाट या वैश्य, जहाजपुर – गुर्जर या मीणा , झोटवाड़ा – जाट या राजपूत, फुलेरा – कुमावत या जाट, शाहपुरा – जाट या राजपूत, फलौदी – ब्राह्मण या विश्नोई , लोहावट – राजपूत या विश्नोई, लूनी – पटेल या विश्नोई, ओसियां – राजपूत या जाट, सरदारपुरा – माली या राजपूत, पोकरण – राजपूत या अल्पसंख्यक, सांचौर – पटेल या विश्नोई, रानीवाड़ा – राजपूत या देवासी, उदयपुरवाटी – जाट या राजपूत, डीडवाना – जाट या अल्पसंख्यक, लाडनूं – जाट या राजपूत, मकराना – जाट या अल्पसंख्यक, नागौर – जाट या अल्पसंख्यक, नावां – जाट या कुमावत, परबतसर – जाट या राजपूत, श्रीमाधोपुर – जाट या राजपूत, फतेहपुर – जाट या अल्पसंख्यक या

ब्राह्मण, जैतारण – जाट या कुमावत, मारवाड़–जंक्शन – सीरवी या राजपूत, गंगापुर – गुर्जर या मीणा, सिरोही–शिवगंज – वैश्य या देवासी, देवली–उनियारा – मीणा या गुर्जर, टोंक – वैश्य या अल्पसंख्यक, उदयपुर सिटी – वैश्य या ब्राह्मण[5]।

जनगणना के आंकड़ों के मुताबिक, राजस्थान की कुल आबादी 2011 में 6.85 करोड़ और 21 में 7.95 करोड़ है, जिसमें 9.07 फीसदी मुस्लिम समुदाय से आते हैं।[6] विधानसभा की 40 सीटें ऐसी हैं, जहां मुस्लिम समुदाय का प्रभाव देखने को मिलता है। राज्य की 24 सीटें ऐसी भी हैं, जहां मुस्लिम वोट बैंक बड़ा है। इन्हीं सीटों को ध्यान में रखकर ही कांग्रेस ने 15 मुस्लिमों को टिकट दिया[7], जिसमे से 4 ही जीत पाए[8]।

राज्य की जन–आंकिकी की ओर दृष्टिपात करें तो पते हैं कि यहाँ 1931 में जातिगत जनगणना अंतिम बार हुई थी और इसमें अधिकृत रूप से राजस्थान की कुल जनसंख्या 1 करोड़ 17 लाख 86 हजार 04 थी. 1931 की जातिगत जनगणना के आंकड़ों के मुताबिक जाट सबसे अधिक 10.72 लाख थे. ऐसे में थोड़ी बहुत जनंसख्या कम या अधिक हुई होगी. बावजूद इसके निसंदेह यह कहा जा सकता है कि राजस्थान में सर्वाधिक आबादी जाटों की है. ये करीब 10–11 प्रतिशत के आसपास हैं, वहीं, दूसरे स्थान पर ब्राह्मण समुदाय है. राजस्थान में सामान्यतः कांग्रेस और भाजपा में सीधी टक्कर रहती हैं. शेखावाटी, मारवाड़ सहित राजस्थान की जाट बाहुल्य सीटों पर ये वर्ग राजनीतिक रूप से बेहद सजग है. यदि एक पार्टी जाट को टिकट देती है और दूसरा अन्य वर्ग के प्रत्याशी पर भरोसा जताती है तो ऐसे में जाट मतदाता लामबंद होकर जाट उम्मीदवार के पक्ष में मतदान करते हैं. इस लामबंदी से बचने के लिए **करीब 30 से 40 सीटों पर दोनों ही पार्टियां जाट उम्मीदवारों को मैदान में उतारती रही हैं.** इसे सियासी पार्टियों की मजबूरी भी कह सकते हैं. इसी कारण राजस्थान विधानसभा में पहुंचने वाले विधायकों में सबसे अधिक जाट समुदाय के ही विधायक चुने जाते रहे हैं. आकंड़ों के अनुसार **हर विधानसभा क्षेत्र में सभी दलों को मिलाकर करीब 30 से 40 विधायक चुन कर हर बार विधानसभा पहुंचते हैं.** यह ज्यादातर शेखावाटी, बीकाणा, मारवाड़ व जयपुर के आसपास के जिलों से चुन कर आते हैं. इन क्षेत्रों में जाट जाति सामाजिक व आर्थिक रूप से प्रभावी है, इसलिए अन्य जाति के मतदाताओं को अपने पक्ष में प्रभावित करते हैं. **वहीं 10 जिलों की करीब 65 सीटों पर जाट बेहद प्रभावी है. साथ ही करीब 100 सीटों पर ये निर्णायक की भूमिका निभाते रहे हैं.[9]**।

इस बार भी 2023 के राजस्थान विधानसभा चुनाव जीतने के लिए कांग्रेस और बीजेपी ने जाति समीकरण बैठाने के लिए सीट के लिहाज से उम्मीदवार उतारे, जाट समुदाय से कांग्रेस ने 36 तो बीजेपी ने 33 जाट प्रत्याशियों को मैदान में उतारा. आदिवासी समुदाय के कांग्रेस ने 33 तो बीजेपी ने 30 प्रत्याशी उतारे. राजपूत समुदाय से कांग्रेस ने 17 तो बीजेपी ने 25 प्रत्याशी दिए. गुर्जर समुदाय से कांग्रेस 11 तो बीजेपी ने 10 प्रत्याशी उतारे. दलित समुदाय से कांग्रेस ने 34 तो बीजेपी ने भी 34 पर ही दांव खेला है. कांग्रेस ने ओबीसी समुदाय से ज्यादा टिकट दिए जबकि बीजेपी ने उसकी तुलना में कम उतारे।

भैरोसिंह शेखावत के समय से ही राजपूत वोट बैंक बीजेपी का परंपरागत माना जाता है. पिछले चुनाव में राजपूत समाज अपराधी आनंदपाल की मुठभेड़ के कारण वसुंधरा सरकार से नाराज था, लेकिन इस बार ऐसा नहीं रहा. 2018 में गुर्जर समाज का वोट सचिन पायलट को लेकर कांग्रेस के प्रति काफी उत्साहित था, लेकिन इस बार वो उत्साह नहीं देखा गया. वैसे भी गुर्जर बीजेपी का परंपरागत वोटर रहा, लेकिन पायलट के कारण पिछली बार बीजेपी के सभी गुर्जर प्रत्याशी चुनाव हार गए थे. जाट समाज हमेशा से बेहद निर्णायक रहा और इस बार कांग्रेस और बीजेपी दोनों ने ही जाटों पर दांव रखा. इस बार विधानसभा चुनाव कई मायनों में गुर्जर बनाम मीणा और राजपूत बनाम जाट भी रहा. इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि ''इन जातियों ने एक साथ एक पार्टी को कभी वोट नहीं किया और पारंपरिक तौर पर यह दूसरे के विरोधी भी रहे है''[10]।

कांग्रेस–बीजेपी दोनों के प्रत्याशी जहाँ जाट हैं, वहां जाट वोटर यह देखता है कि कौन जाट प्रत्याशी जीत रहा है, उसी के पक्ष में खुलकर वोट करता है. इसी तरह गुर्जर मतदाता भी जहां उनके जातीय को

कैंडिडेट जीत रहा होता है, उसी के पक्ष में मतदान करते हैं. जाट और गुर्जर बहुल सीटों पर इसी समीकरण के कारण दूसरी जातियों का एकतरफा वोट विपक्ष में ध्रुवीकृत होकर पड़ता है. विपरीत ध्रुवीकरण की इस हर सीट की प्रवृत्ति से इन जातियों के मुख्यमंत्री बनने के दौरान भी देखा जा सकता है, एक कारण शायद यही है कि गुर्जर और जाट समुदाय से अभी तक राजस्थान में कोई भी नेता मुख्यमंत्री नहीं बन सका है, वहीं इसी विपरीत ध्रुवीकरण का एक अल्पसंख्यक जाति माली जिसके महज दो फीसदी वोट होंगे, उनका प्रतिनिधित्व करते हुए अशोक गहलोत अपनी जादूगरी से सत्ता की कमान तीन बार संभाल चुके हैं।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची


1. https://sundayguardianlive.com/news/caste-politics-is-a-key-factor-in-rajasthan-polls
2. https://www.hindustantimes.com/rajasthan-elections/rajasthan-assembly-elections-2018-caste-arithmetic-gives-way-to-development-equation/story-RiLfl1qeg8Q5wUJ2wryd1J.html
3. https://www.hindustantimes.com/rajasthan-elections/rajasthan-assembly-elections-2018-caste-arithmetic-gives-way-to-development-equation/story-RiLfl1qeg8Q5wUJ2wryd1J.html
4. https://www.hindustantimes.com/jaipur/79-14-polling-recorded-in-rajasthan-s-ramgarh-assembly-constituency/story-nZu3gnkpWH98QMNc4JAoqM.html
5. https://www.bhaskar.com/news/raj-jod-hmu-mat-latest-jodhpur-news-051003-1712537-nor.html
6. https://www.indiacensus.net/states/rajasthan
7. https://www.indiatv.in/rajasthan/india-tv-cnx-opinion-poll-rajasthan-assembly-election-caste-list-who-support-bjp-and-congress-2023-10-27-997462
8. http://timesofindia.indiatimes.com/articleshow/105714400.cms?utm_source=contentofinterest&utm_medium=text&utm_campaign=cppst
9. https://www.etvbharat.com/hindi/rajasthan/state/jhunjhnu/rajasthan-assembly-elections-2023-seven-decades-of-jat-politics-in-rajasthan-yet-no-leader-from-the-jat-community-has-become-chief-minister/rj20231130153547628628817
10. https://www.tv9hindi.com/state/rajasthan/rajasthan-assembly-election-23-ashok-gehlot-vasundhara-raje-25-november-caste-vote-bjp-congress-2242917.html.


❖◆❖